



॥ अग्नि देव पूजा विधि ॥
अग्नि देव पूजा, जो कोई नर करे
सुख संपत्ति धन धान्य से, जीवन सफल
बनावे

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ अग्नि देव पूजा विधि ॥

अग्नि देव वैदिक देवताओं में प्रमुख माने जाते हैं। इन्हें यज्ञ, हवन, शुद्धि और तेज का देवता कहा जाता है। अग्नि देव की पूजा करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा, शुद्धता और सुख-समृद्धि आती है।

पूजा का शुभ समय

रविवार या मंगलवार शुभ माना जाता है।

प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

हवन या विशेष धार्मिक कार्यों के समय पूजा करना उत्तम माना जाता है।

पूजा सामग्री

अग्नि देव का चित्र या प्रतीक, हवन कुंड (यदि संभव हो)
घी, कपूर और समिधा, चंदन, रोली, अक्षत, लाल या पीले पुष्प
धूप, दीप, फल और मिठाई
गंगाजल

पूजा विधि

1. स्थान की शुद्धि

पूजा स्थान को साफ करें और गंगाजल छिड़कें।

2. दीप और अग्नि प्रज्वलन

घी का दीपक जलाएँ।

यदि हवन कर रहे हों तो हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित करें।

3. संकल्प

हाथ में जल और पुष्प लेकर संकल्प करें:

“मैं श्रद्धा और भक्ति से अग्नि देव की पूजा कर रहा/रही हूँ। कृपया मेरे जीवन को शुद्ध, तेजस्वी और मंगलमय बनाएं।”

4. पूजन

चंदन, अक्षत और पुष्प अर्पित करें।
धूप-दीप दिखाएँ।
घी की आहुति दें।
नैवेद्य अर्पित करें।

अग्नि देव मंत्र

ॐ अग्नये नमः॥
या वैदिक मंत्रः
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

हवन विधि (संक्षेप)

हर आहुति के साथ बोलें:
ॐ अग्नये स्वाहा॥

आरती

अंत में अग्नि देव की आरती करें और प्रसाद बाँटें।

पूजा के लाभ

घर और मन की शुद्धि
नकारात्मक ऊर्जा का नाश
आत्मबल और तेज में वृद्धि
सुख-समृद्धि और शांति
यज्ञ और पूजा का पूर्ण फल

विशेष सावधानियाँ

अग्नि के पास सावधानी रखें।
पूजा में सात्विकता और स्वच्छता बनाए रखें।
क्रोध, झूठ और अपवित्र विचारों से बचें।